Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

दीनदयाल उपाध्याय: एक समग्र चिन्तन

डॉ. यशवन्त यादव
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर उ.प्र.
ईमेल: dryashwantyadaw@suksn.edu.in

शोध सारांश

भारत की पुनर्रचना में दीनदयाल उपाध्याय की चिन्तन की महती भूमिका साबित हो सकती है। नए भारत के निर्माण में यह चिन्तन मार्ग दर्शक की भूमिका में हो सकता है। उनका विचार था कि भारत से ममत्व रखने वाले प्रत्येक भारतीय को राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करना चाहिए। पंडित दीनदयाल का मानना था कि आत्मचेतना और आत्मगौरव से अभिभूत व्यक्ति और राष्ट्र न केवल सक्षम होगा बल्कि लोक कल्याणकारी भावना से अभिभूत होगा। जिस प्रकार महात्मा गाँधी साध्य और साधन की शुद्धता पर बल देते थे उसी तरह से दीनदयाल उपाध्याय भी साध्य और साधन की शुद्धता पर बल देते हुए राजनीतिक आदर्शवाद का सिद्धान्त दिया। संस्कृति निष्ठा उपाध्याय जी के द्वारा निर्मित राजनैतिक जीवन दर्शन का पहला सूत्र है। उनके शब्दों में "भारत में रहने वाला और इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन हैं। उनकी जीवन प्रणाली, कला, साहित्य, दर्शन सब भारतीय संस्कृति है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है। इस संस्कृति में निष्ठा रहे तभी भारत एकात्म रहेगा"।

प्रमुख शब्द: मानववाद, राष्ट्रवाद, साहित्य, संस्कृति, एकात्म मानववाद, कालीकट अधिवेशन, सर्वोदय, अन्त्योदय, आर्दशवाद, स्ट्रक्चर, अर्थोपार्जन।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चिन्तक और संगठनकर्ता, भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष, भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करने वाले देश को एकात्म मानववाद नामक एक समावेशित विचारधारा प्रदान करने वाले, एक मजबूत और सशक्त भारत चाहने वाले, राजनीति के अतिरिक्त साहित्य में भी गहरी अभिरूचि के साथ हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित लेख से उन्हें जनसंघ की आर्थिक नीति का रचनाकार माना जाता रहा है। उनका विचार था कि आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य सामान्य मानव का सुख है।

उपाध्याय जी पत्रकार होने के साथ-साथ चिन्तक और लेखक भी थे। उनकी असामयिक मृत्यु से यह बात स्पष्ट है कि जिस धारा में वे भारतीय राजनीति को ले जाना चाहते थे वह धारा हिन्दुत्व की थी। इसका संकेत उन्होंने अपनी कुछ कृतियों में भी दे दिया था। इसीलिए कालीकट अधिवेशन के बाद मीडिया का ध्यान उनकी ओर गया।

इस प्रकार 'एकात्म मानववाद' के आधार पर भारत राष्ट्र की कल्पना करने वाले महानायक पंडित दीनदयाल उपाध्याय पर आधारित भारतीयता और राष्ट्रीयता की अवधारण उनके चिन्तन और विमर्श के मूल भावना में केन्द्रित है।

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार राष्ट्र केवल एक भौगोलिक इकाई मात्र नहीं है। वह राष्ट्र की समग्रता के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और उसी परिप्रेक्ष्य में समाज के अंतिम व्यक्ति की चिन्ता करते हुए अपने चिन्तन के मूल केन्द्र में रखते है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का विचार था कि जब तक आर्थिक आत्मनिर्भरता नहीं होगी तब तक राजनीतिक आजादी का कोई सार्थक परिणाम नहीं प्राप्त होगा। सामाजिक और राजनीतिक उत्थान का संबन्ध प्रत्येक मानव की मुक्ति से है। विशेष रूप से आत्मनिर्भर समाज की स्थापना में राज्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। सर्वोदय से अन्त्योदय तक की उनकी दार्शनिक विचारधारा आज के परिवेश में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने दार्शनिक चिन्तन में प्रकृति, संस्कृति और विकृति को बहुत स्पष्ट रूप से समझाया है। वास्तव में पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनैतिक आदर्शवाद के संवाहक हैं।

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति के प्रति उनका वैचारिक अधिष्ठान भविष्य के भारत निर्माण के लिए प्रमुख स्तम्भ है। इस कारण से विशेष रूप से विद्यार्थियों को दीन दयाल उपाध्याय के वैचारिक अधिष्ठान से परिचित कराया जाना चाहिए।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने न केवल भारत के लिए बल्कि सम्पूर्ण दुनिया के लिए एक चिन्तन दर्शन दिया है। एकात्म मानववाद में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन स्तर को ऊपर उठाने और व्यक्ति के माध्यम से राष्ट्र की उन्नति का सन्देश उनके चिन्तन में दिखाई पड़ता है। वह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में न केवल राष्ट्र के लिए बल्कि व्यक्ति और समाज के लिए भी अनुकरणीय है।

जब तक सभी को मुस्कान और स्वाभिमान न प्राप्त हो जाये तब तक भारत विकसित या विकास या विकासशील हुआ है यह बात बेमानी है। उन्होंने कहा कि हम पूर्ण रूप से विकसित तब तक नहीं होंगे जब अन्तिम पायदान पर रहने वाला प्रस्फुटित नहीं होगा। नई शिक्षा नीति 2020 में पंडित दीनदयाल के विचारों को समाहित किया गया है। अन्त्योदय की धारणा को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि-"कितना बैल सलोना है, गोबर इसका सोना है। पर हो गये खेती से दूर, तभी तो रोते हैं मजदूर"। " जीवों के प्रति जो दयाल है, वही दीनदयाल है"।

दीनदयाल जी ने भारत को स्थापित करने के लिए भारत के चित्त का ज्ञान होने की आवश्यकता बतलाई है। बिना इसके कोई भी अर्थ नहीं जाना जा सकता है। भारत को समझने के लिए माँ बेटे की एकात्मकता को समझने की जरूरत है ऐसा पंडित दीनदयाल जी का मानना था। पंडित दीनदयाल जी का मानना था कि किसी भी राष्ट्र का उत्थान उसके नागरिकों के उत्थान के बिना संभव नहीं है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन मूल्य, नैतिक मूल्य, कतव्र्य मूल्य, चिन्तन मूल्य, मीमांसा मूल्य पर आधारित उनके चिन्तन पक्ष से सभी को अवगत होना चाहिए जो आज के लिए अधिक प्रासंगिक हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्र

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्र को उस वृक्ष के समान माना जिसमें तना, फल, फूल, पत्ती इत्यादि सभी अपना विकास करते हैं, अपनी उन्नति करते हैं और इस सब का आधार उसकी जड़ है। उसी प्रकार से भारत के विकास और

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

उन्नति में भारत की संस्कृति उसके जड़ के रूप में कार्य करती है। यहीं से ऊर्जा प्राप्त होती है जिस ऊर्जा के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्ग भी अपना विकास करते है। "हम अपनी राष्ट्रीय पहचान के विषय में सोचें यह बहुत जरूरी है, क्योंकि इसके बिना राष्ट्र का कोई महत्व नहीं होता है।"

पंडित दीनदयाल जी का चिन्तन, दर्शन

पं. दीनदयाल जी के चिन्तन, दर्शन, विचार की क्या उपादेयता हो सकती है? हम सभी जानते हैं कि भारतीय क्षितिज से उपजा हुआ कोई सिद्धान्त यदि कहीं दिखाई पड़ता है तो वह दीनदयाल जी में दिखाई पड़ता है। पूर्व में जितने भी सिद्धान्त, राणनीतियां, भारतवर्ष में अपनायी गयी वैश्विक परिदृश्य में तो ठीक थी, विश्व के भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में जहाँ-जहाँ उनका उपयोग किया गया उनकी दृष्टि से ठीक रही होंगी। उससे अच्छे परिणाम भी उन्हें प्राप्त हुए होंगे। लेकिन भारतवर्ष की स्थिति के अनुरूप वे राणनीतियां नहीं थी। इसलिए उनके जो सुखद परिणाम प्राप्त होने चाहिए थे भारत भूमि को, भारत भूमि के जनमानस को, भारत भूमि के पद्धति को, संस्कारों को वह प्राप्त नहीं हो सका, अपितु विकृतियां अधिक आने लगी। समस्याएं अधिक उपजने लगी। अलगाववादी शक्तियां आधिक काम करने लगी क्योकिं उन नीतियों के दर्शन में ही पृथक-पृथक करके, अलग-अलग करके नीतिया बना करके उनके कल्याण की बात सोची जा रही थी। चाहे वो सार्वजनिक क्षेत्र व निजी क्षेत्र को मिला कर कोई रणनीति बनाई हो। जिसे हमने अर्थव्यवस्था कहा हो चाहे वह राज्य का राष्ट्र को केन्द्र मे रखकर रणनीति बनाने वाली हो और चाहे वो निजी क्षेत्र को केन्द्र में रखकर निजी क्षेत्र की रणनीति बनाने वाली हो, प्रथम दृष्टया सब की सब अच्छी लगती है इसके अच्छे परिणाम मिलने की संभावना लगती है। लेकिन अन्ततोगत्वा ये वो परिणाम हमें प्राप्त नही होते, जिनकी आवश्यकता है भारतीय समाज को।

हम सभी जानते है कि पूरा विश्व कोविड़-19 की समस्या से ग्रस्त रहा है। अब इसके कारण ही अर्थशास्त्र पूरे विश्व का विगड़ गया। और जो जितने ही विकसित राष्ट्र थे उनकी अर्थव्यवस्था उतनी ही विगड़ी और जो टॉप की कन्ट्री जिन्हें हम जी 20 कन्ट्री कहते हैं विश्व का जिनके पास जनसंख्या का अनुपात तो 25-30 प्रतिशत है लेकिन विश्व की सबसे अधिक राष्ट्रीय उत्पाद का हिस्सा 73-74 प्रतिशत है। वो जो था वो विगड़ गया। उनकी जो वृद्धि स्तर थी वो ऋणात्मक हुई।

भारतवर्ष ने जो कुछ काम किया जिनमें धारा 370 हटी थी इसको लेकर एक डस्टविन की समस्या आई हम सभी जानते हैं कि शाहीन बाग में एक आन्दोलन महीनों -महीनों चलता रहा। एक बात है जब कोविड़-19 का संकट भारतवर्ष में आ रहा था उसी समय हम सभी जानते हैं कि जमातियों का एक बड़ा अधिवेशन दिल्ली में हुआ निजामुद्दीन में, और जब ये कहा गया कि भाई ठीक नहीं है इतना बड़ा संघ ठीक नहीं है। वो जो पांच भिन्न-भिन्न राष्ट्रों से आये थे। उनके कारण भी सामाजिक, धार्मिक जो संकट भारत वर्ष में उपस्थित हुआ वह भी एक विशेष परिस्थिति भारतवर्ष में पैदा की।

भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न प्रकार के धर्मावलम्बी जो हैं वो इससे मुकाबला करने के लिए शासन की जो नियम कानून है उनके पालन करने के लिए नहीं सोचा। यहां तक की हमारे डाक्टर, नर्सेज जो जाते है उपचार के लिए भी उन्हें भी आपत्ति नहीं हुई। जो वामपंथी चिन्तन के लोग थे उन्होंने भी इसका लाभ उठाने का प्रयास किया। यहां तक कि जब

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

20 लाख करोड़ का एक पैकेज दिया गया। और अन्तिम चरण में आकर लगभग तीन महीने से हम देख रहें हैं कि जो किसानों का आन्दोलन जिस प्रकार से चल रहा है भारतवर्ष में तीन कृषि संबन्धी कानूनों का निर्माण हुआ है कृषकों के हित में इसका निर्माण हुआ है। जो कृषक स्वयं यह मानते है कि वह इनके लिए हितकारी नहीं है उसे वापस लेना चाहिए। मै किसी प्रकार की इस पर टिप्पणी नहीं करना चाहूँगा। मेरा कहना है कि किसानों की हठधर्मिता से और सरकार की हठधर्मिता से नुकशान राष्ट्र का हो रहा है देश का हो रहा है।

मुझे लगता है कि जो समसामयिक समय में सबसे कठिन परिस्थिति है जिस दौर से भारतवर्ष इस समय गुजर रहा है उसमें दीनदयाल जी की जो सहजतावादी चिन्तन, अध्यात्मवादी चिन्तन जो एक दूसरे को जोडे रहकर सबको आगे बढ़ाने की भूमिका निभा सकता है। मैं बहुत ही स्पष्ट तौर पर कहना चाहूँगा कि यदि यह मान लिया जाए कि जिस प्रकार से राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण किया और लगभग 5 लाख लोगों के सामने विचार हुआ इस पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई जिसमें 2.50 लाख सामान्य और 2.50 लाख अलग प्रकार के विचार रहे। क्यों न जब इस प्रकार का कानून लाएं तो इस प्रकार का विचार विमर्श करना चाहिए ये दीनदयाल जी के चिन्तन विचार से उपजी बात का जितना अधिक विचार, चिन्तन, जितना अधिक इससे जोडें ंगे उतना अधिक अच्छा चिन्तन हमारे पास होगा। कहीं न कहीं दीनदयाल जी के चिन्तन के आधर पर ही हम उपयोगिता की बात करतें हैं हमें इसकी समस्या को ठीक ढं ंग से समझना होगा।

स्वदेशी का भाव दीनदयाल जी का एक प्रमुख भाव था। जिसके अन्तर्गत वो चाहते थे यही मान लीजिए की ऐसी वस्तुओं का निर्माण हो जो कि अपने देश में जन्म लें। लेकिन साथ ही साथ ये भी कहा कि विश्व में स्वबंस वित वनत हसवइंस, यानि की वाणी से निकला हुआ मात्र हों। हमारा जो स्वबंस हो वह ळसवइंस से भी कनेक्ट होना चाहिए। दीनदयाल जी चाहते थे कि जो भी बेस्ट हो विश्व का भारतवर्ष में आना चाहिए और जो हमारा बेस्ट हो उसको हम विश्व को देकर रहं ेगे। और जो विश्व का वैश्विक है उसे स्वदेशानुसार बनाना है। जो प्राचीन है उसे युगानुसार बनाना है। समसामयिक परिस्थितियों में जो हमारा है। ये समझिए की प्राचीन युगीन सिद्धान्त है उसे युगानुसार बनाने का प्रयास करना होगा। हम प्राचीन के धरोहर हो जायं वह आज किस काम के। उन्हे प्रासंगिक बनाने का प्रयास करना है। और जो विश्व में सबसे अच्छा है उसे स्वदेशानुकूल बनाने की बात हो। वही बात जो आत्मनिर्भरता पैकेज आया था उसके अन्तर्गत प्रधानमंत्री जी ने कहा। उसी दृष्टि से एक बात आयी कि हमारे नतीजे जो गाँव से जुड़े रहने वाले हैं। आत्मनिर्भरता की बात जो प्रधानमंत्री जी ने की वह पूरा का पूरा पैकेज आत्मनिर्भरता का था, वहीं से स्वदेशी बनाने की रणनीति का सुभारम्भ हो जाता है। पूरे साढ़े 6 लाख गाँव की बात करता हूँ वहां से जो संसाधन है चाहे कृषि, पशुधन, वन सम्पदा के संसाधन हो ये सब संसाधन हमारे पास उपलब्ध हैं। कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं है।

आज इस प्रकार की आवश्यकता आ पडी है कि हमको इस प्रकार का मा ॅडल बनाना है। अब प्रश्न ये उठता है कि जो वस्तुएं हमारे पास उपलब्ध है। हम राफेल नहीं बना सकते है। हमें राफेल आयातित करना है। हम कपडे आयातित करें, गुड्डे, गुड़िया आयातित करें। हम मोम आयातित करें, हम काफी आयातित करें, भोजन सामग्री आयातित करें, ये नहीं ये देश निर्मित हो सकती है। इसी प्रकार से ये जो समसामयिक परिस्थितियां है, ये जो हमारा स्ट्रक्चर चल रहा है, उस स्ट्रक्चर के हिसाब से जो नीतियां है वो दीनदयाल के हिसाब से समसामयिक परिस्थितियां है।

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

अन्त्योदय हम केवल पैसे बांटने से लेकर नहीं ला सकते हैं। अभिजीत बनर्जी जो एक नोबल लारैट है वह कहते हैं कि साहब कैस ट्रांसफर नहीं होना चाहिए इकोनॉमी ट्रांसफर होना चाहिए, इम्प्लायमेंट ट्रांसफर होना चाहिए उससे क्या होगा कि इकोनामी सस्टेनेबली बनेगी। भारत में एक अच्छी पद्धति है जो मन्दिर होते है उसके चारो ओर लाखों लोग होते है। लाखों लोगों को भोजन कराए जाते हैं। गुरूद्वारे मे लंगर की व्यवस्था की जाती है। इसी प्रकार यदि हम बांट दे तो देशभर में भुखमरी समाप्त हो जाएगी। अभी हमारा माडल नहीं है। हमारा माडल भिक्षा वाला नहीं है। "उत्तम-खेती मध्यम बान, निसिद्ध चाकरी भीख निदान" अर्थात जब कुछ न मिले तब भीख मांगों, उससे पहले उत्तम है चाकरी, उसके पहले वणिक, मध्यम वाण है, सबसे पहले खेती की बात है। जो भारतवर्ष में रही है जो अभी भी है। विश्वभर में खेती किसानी है जो बचा रखी है।

कोविड़-19 के दौरान भी हमने 86 करोड़ जनसंख्या को 9 महीने से लगातार भोजन की व्यवस्था कराई है। ये भारत की संवेदनशीलता से ऊपजा हुआ अर्थशास्त्र है जो कि हम करवा पांए। हमारा कहना है कि दीनदयाल जी की जो बात है वो किस प्रकार की आप असमानताओं को कुछ कर पायें, उसके लिए गाँव एक है, एम.एस.पी. तो हमे छोटे मंझोले में बांध दे, एम.एस.पी. से मतलब है छोटे-मंझोले उद्योग लगाने पड़े, छोटे मंझोले उद्योग की जो कल्पना आ रही है वो अगर परिवर्तन हो रहा है, इसमे भी रूपांतरण की बात होनी चाहिए अभी एम.एस.पी. से हमारा तात्पर्य होता है कि खादी ग्रामोद्योग इससे ऊपर उठकर बात है। आज गाँव का जो एक नवयुवक है उसके अन्दर कार्य कुशलता सहजरूप से आ गयी है, वाट्सएप चलाना सभी को आ गए। वाट्सएप चलाने और मोबाइल के कारण जो वैश्विक घटनाएं हो रही है उससे जागरूक हो गया है। एक उदाहरण है कि आय की असमानता होगी तो विकास नही होगा। इससे क्षेत्रीय असमानता दूर करने के भी बारे में हम सोच सकते है।

दीनदयाल जी से उपजा हमारा जो चिन्तन है समसामयिक परिस्थिति में अधिक उपयोगी है। इस प्रकार आर्थिक मॉडल कौन सा उपयोगी हो सकता है ? क्षेत्रीय असंतुलन बहुत अधिक बढ़ते जा रहे हैं कुछ तो बहुत अधिक विकसित है। और कुछ तो बहुत अधिक पीछे हैं। कुछ राज्यों मे भी कुछ बहुत अधिक विकसित है और कुछ कम विकसित होते है। उनके लिए नीति बनाने का कार्य जो दीनदयाल जी का क्षेत्र संबन्धी विशेषताएं है उसे स्वीकार करना पडेगा। ये जो सभी क्षेत्र की अपनी विशेषताएं होती हैं इसी विशेषताओं को ध्यान देना पड़ेगा। एक सेब है-हिमांचल में आप सेब उगा सकते हैं लेकिन सिद्धार्थनगर में सेब नहीं उगा सकते हैं। वहां हिमांचल जो सेब की खेती का, गेहूँ की खेती सिद्धार्थनगर में, अरहर की खेती का, हर जगह की विशेषताओं को लेकर इसे बनाई है-लेकिन गेहूँ पैदा करने वाला हमेशा गरीब ही बना रहे, सेब पैदा करने वाला हमेशा अमीर ही बना रहे। नहीं इसके लिए नीति कैसी बननी चाहिए ये जो एकात्मता की बात आ रही है एकात्मवादी नीतियां तो बने। एकात्मवादी नीति इस प्रकार से बन पाएगी।

आज की जो समसामयिक परिस्थितियां हमारे पास हैं वो भारतवर्ष के लिए एक विकट परिस्थितियां है इसमें दीनदयाल जी का जो सिद्धान्त है जो अर्थ चिन्तन है वो एक भारतीय संवेदन को उठाकर एक अच्छा मॉडल एक अच्छा समाधान हमारे सामने उपलब्ध करती है। ईशावपनोषिद, उपभोगवाद में बताते है त्याग पहले करते है।

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

वास्तव मे दीनदयाल उपाध्याय जी का वैचारिक अनुष्ठान भारतीय संस्कृति का सार है। भारतीय संस्कृति मनुष्य जीवन के रचना के समस्त आयामों का सम्पूर्ण सृष्टि से संबन्ध का एक संकलित अध्ययन करती है। खण्ड-खण्ड में विचार करना शोध की दृष्टि से आकर्षक लगता है और वैशिष्टीकरण को बढ़ावा देता है। परन्तु वस्तु स्थिति यह है कि मनुष्य परिवार का एक अंग है। परिवार समाज से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। समाज का राष्ट्र से पृथक न किए जा सकने वाला संबन्ध है। और कोई भी राष्ट्र मानवता का अंश है। इस प्रकार से मानव समाज, परिवार, राष्ट्र, इसमें जो आधार भूत अन्तर्सम्बन्ध है। और इनकी जो पारस्परिकता अनुकूलता है। उस पर आधारित भारतीय मानव जीवन व्यवस्था की विशेषता है।

भारतीय संस्कृति की एकात्मकता और पाष्चात्य मानववाद

दीनदयाल जी ने भारतीय संस्कृति की एकात्मकता और पाश्चात्य मानववाद के तथ्यों को संश्लेषित करते हुए नये विचार पैदा किया जिसमें मानव की उपेक्षा नहीं की गई है। लेकिन उसमें मानववाद को महत्वपूर्ण स्थान नहीं प्रदान किया गया है। महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है कि मानव यदि केन्द्र बिन्दु है तो मानव से परिवार अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। और मानव परिवार का एक अभिन्न अंग है। और इसी प्रकार से परिवार समाज के बारे में चिन्ता करता है और समाज से भी बड़ी इकाई राष्ट्र है और राष्ट्र से बड़ी इकाई संम्पूर्ण विश्व है और ये माना गया है कि पाश्चात्य विचार जिसमें मानव का एक वृत्त है उस वृत्त को घेरे हुए परिवार का वृत्त है। मानव का वृत्त समाप्त और परिवार का वृत्त शुरू और इसी प्रकार से अलग-अलग वृत्त बने हुए है वो नहीं है अपितु ये एक स्पाइरल व्यवस्था है। सभी एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े है। इसलिए ये माना गया है कि सृष्टि के जो विभिन्न रूप हैं उन रूपों में जो परस्पर अनुकूलता है। परस्पर पूरकता है उसके आधार पर समाज की रचना की गई है।

हमारे यहां भारतीय जीवन दर्शन में अर्थ अर्थोपार्जन, धन कमाना आर्थिक व्यवस्था का उद्देश्य होते हुए यह भी आवश्यक है कि अर्थ का प्रयोग केवल धर्म कार्य में किया जाय, धर्म का अर्थ पूजा पाठ, भक्ति केवल इतना मात्र नहीं है। धर्म का अर्थ उन कर्तव्यों का उन आचारों का समुच्चय उस व्यवहार का समुच्चय जो विचार समाज को धारण करने में सहायक है। ये है धर्म। अर्थात अर्थोपार्जन तो होगा लेकिन अर्थव्यवस्था ऐसी नहीं होनी चाहिए जो समाज में छिन्न भिन्नता का समाज में द्वेष का कारण बने। अपितु अर्थव्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो समाज में सद्भाव, समाज में एकात्मकता, समाज के विभिन्न भावों में अन्तर को, दूरी को कम करते हुए हो। उस अर्थ में यह आता है कि अर्थ व्यवस्था का संचारण इस प्रकार से होना चाहिए।

ऐसी व्यवस्था जो पर्यावरण संरक्षण पर आधारित है ऐसी व्यवस्था जिसमें विषमता कम से कम हो और प्रत्येक व्यक्ति के लिए समाज के सबसे छोटे से छोटे व्यक्ति के लिए आदरपूर्वक सम्मानपूर्वक जीवनयापन के लिए व्यवस्था हो, दीनदयाल उपाध्याय उस समय प्रतिपादित किये थे और विश्व का सबसे बड़ा संगठन यूनाइटेड नेशन आर्गेनाइजेशन अब 21वीं शताब्दी में ऐसा कर रहा है।

यह सार्वभौमिकता, महानता का परिचायक है यदि हम भारत की आर्थिक व्यवस्था को उस दृष्टि से विचार करते हैं तो हमारे लिए यहां आवश्यक होता है कि हम ये जाने कि भारतीय अर्थव्यवस्था में एकात्मकता के पूर्व सिद्धान्त को लागू करने के लिए कौन-कौन सी परिर्वतन और नीतियों की आवश्यकता है। क्या भारत के लोग इस दिशा में काम कर

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

रहें है? ये अब सामान्यज्ञान का विषय है कि स्वाधीनता प्राप्ति के लगभग 73 वर्ष पश्चात भी भारत की कार्यशील जनसंख्या का लाभ 43 प्रतिशत कृषि पर आधारित है। 138 करोड भारत देश में कुल कार्यशील जनसंख्या 49 करोड़ है और कृषि पर आधारित कार्यशील जनसंख्या 21 करोड़ है। कार्यशील जनसंख्या का आशय है कि जनसंख्या का वो भाग जो आय अर्जन में प्रत्यक्ष रूप से भाग ले रहा है। 49 करोड़ में से 28 करोड़ जनसंख्या गैर कृषि कार्य क्षेत्र में भाग ले रही है। यह 21 करोड़ जो जनसंख्या है यह भारतवर्ष की आय का लगभग 15 प्रतिशत भाग पर ही अपना अधिकार स्थापित किए हुए है। और 85 प्रतिशत भूमि पर इस शेष 28 करोड़ कार्यशील जनसंख्या का अधिकार है। इस कृषि क्षेत्र में कार्य करने वाली जनसंख्या की प्रतिव्यक्ति आय गैर कृषि क्षेत्र में कार्य करने वाली जनसंख्या की तुलना में 1/4 लगभग है। गैर कृषि क्षेत्र में कार्य करने वाले लोग, कृषि क्षेत्र में कार्य करने वाले लोग की तुलना में पांच गुना से चार गुना प्राप्त करने वाले लोग प्रतिव्यक्ति आय कर रहे है। इतनी बड़ी विषमता को दूर करने के लिए एक संभावना तो ये है कि कृषि में प्रति व्यक्ति आय बढ़ाई जाय।

इसलिए कृषि क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के मूल्यों में उतनी वृद्धि नहीं हो पा रही है। उनको माप भी नहीं करवा पा रही है। इसके लिए आवश्यक है कि कृषि पर निर्भर जनसंख्या के प्रतिशत को कम किया जाए। बहुत से लोग यहां सोच रहें होंगे कि माप बढ़ाने का बहुत बड़ा जो अस्त्र था न्यूनतम समर्थन मूल्य एम.एस.पी.।

सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य कानूनों द्वारा लगभग वह व्यवस्था समाप्त कर दी है। उसके बारे में मैं ये कहना चाहूँगा कि न्यूनतम समर्थन मूल्य की व्यवस्था शोध के आधार पर प्राप्त किए गए निष्कर्षो के द्वारा यह सिद्ध होता है कि यह व्यवस्था केवल 6 प्रतिशत कुल किसानों को कुल लाभ प्राप्त कर रही थी। और ये जो 6 प्रतिशत किसान है केवल यही एम.एस.पी. के द्वारा अपनी मूल्यों को एग्रीकल्चर प्राइस कमेटी यानि की मंडी समितियों मे केवल 6 प्रतिशत किसान ही अपना उत्पाद माल बेच रहे थे। केवल भारत के बड़े किसानों को ये व्यवस्था लाभ प्रदान कर रही थी और इस व्यवस्था के चलते भारतीय अर्थव्यवस्था और भारतीय कृषि को इसकी हानि पहुँच रही थी।

ये नये कृषि कानून जहां एक ओर धनी-निर्धन किसान के बीच एम.एस.पी. के द्वारा कम करने का विचार है वहीं दूसरी ओर इस एम.एस.पी. के कारण चावल, गेहूँ, की कृषि अनेक कारण पानी का अत्याधिक उपयोग के कारण (हरियाणा और पंजाब के कृषक कर रहे थे) जल की दुर्लभता का संकट, ये सब भूमि की ऊर्वरक क्षमता की कमी होना ये सब पर्यावरण ह्रास के जो व्यवस्थाएं है उनको भी दावा मिल रहा था। नये कृषि कानून के द्वारा इस प्रकार की अन्याय की व्यवस्था को समाप्त करने का प्रयास किया गया है। जिसका की केवल झूठा लाभ के कारण विरोध हो रहा है। और वो भारतीय अर्थव्यवस्था को निश्चित रूप से नुकशान पहुँचाने वाला उपक्रम होगा। और मेरा इस अध्ययन के माध्यम से आप लोगों को ये बताना आवश्यक है जहां एक ओर बहुत लम्बे समय से कृषि में गेहूँ, चावल जिनमें अच्छी उत्पादन की स्थिति भारत में पैदा हो रही है जिनमें भारत इन उत्पादन को प्रोत्साहित करेगा और इन वस्तुओं का उत्पादन करेगा जिनके कारण जिनके द्वारा फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री जो गाँव में स्थापित हो सकेगा जिनके द्वारा एक बड़ा लाभ यह भी होगा कि जनश्रम की आत्मनिर्भरता होगी, इस दृष्टि से इन कृषि कानूनों के बारे में इतनी बात कहने के बाद मैं यह कहूँगा कि भारतीय अर्थव्यवस्था का विविधिकरण के लिए दूसरी आवश्यकता है।

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

मैं यहां यह रेखांकित करना चाहूँगा कि पश्चिम के औद्योगिक इकाईयों के प्रतिमान की तुलना में इन इकाईयों के प्रतिमान में आर्थिक वृद्धि दर उतनी नहीं है। परन्तु भारत के लिए बहुत आवश्यक है। इसलिए भारत की वर्तमान सरकार ने इन इकाईयों के विकास के लिए विशेष व्यवस्था की और इस विकास माध्यम के द्वारा वर्तमान बजट में 15 हजार 700 करोड़ रू0 इस वर्ष के लिए इन इकाईयों को आवंटित किया गया है। देखना यह है कि आर्थिक वृद्धि की ऊंची दर अपने आप में बहुत वांछनीय लक्ष्य है। परन्तु एकात्म मानववाद की दृष्टि से जहां हमसे ये अपेक्षा की गयी है कि हर व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीवन जीने के अवसर प्राप्त हो सकें। उसको जीवन के लिए आवश्यक न्यूनतम सुविधाएं प्राप्त हो सके। उसको स्वास्थ्य, शिक्षा का लाभ हो सके। ऐसे परिवार भी अपने बच्चे के लिए अच्छी शिक्षा और अच्छे स्वास्थ्य की सुविधा उपलब्ध करा सके। इसके लिए आवश्यक है कि उन लोगों को इसके लिए कुछ न कुछ रोजगार प्राप्त हो सके।

उपसंहार

यह एक बहुत ही प्रासंगिक विषय है कि भारत की नई शिक्षा नीति में जो प्रयास किए गए हैं उनमें वोकेशनल एजूकेशन को डिग्री एजूकेशन का एक इसेंसियल पार्ट माना गया है। जिनमें नवयुवक, नवयुवतियों का कौशल विकास का स्तर बढ़ेगा और डण्ैण्डमण् सीमान्त और मध्यम श्रेणी के उद्योंगों में रोजगार प्राप्त कर सकेगें। इस समय भारत की जो औद्योगिक व्यवस्था है उनमें वृहद स्तर पर काम करने वाले उद्योगों को जो सुविधाएं राज्य के स्तर से व्यवस्था के स्तर पर मिल रहीं है वह बहुत अधिक है। इन उद्योगों को उतनी सुविधाएं नहीं मिल पा रहीं है।

इस नई नीति को और अधिक प्रभावी ढ़ंग से लागू करने के लिए और अच्छे ढ़ंग से उद्योग और सेवा क्षेत्र में स्थापित करने के लिए सहज अन्य नीतियों की आवश्यकता है। जिसका वर्णन इस समय नहीं किया जा सकता। यहां इतना कहना आवश्यक है कि पं. दीनदयाल जी के विचार पर आधारित समाज व्यवस्था बनाये रखने के लिए जो कि हम लोगों के लिए आवश्यक है, जो कि पूरे विश्व के लिए आवश्यक है उसमें आर्थिक वृद्धि की दर निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ सूची

1. उपाध्याय, दीनदयाल: पुनर्मुद्रित, एकात्म मानवाद, जागृति प्रकाशन नोएडा, 2008।
2. गुप्ता, बजरंग लाल: हिन्दू अर्थ चिन्तन दृष्टि एवं दिशा, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, 2018।
3. उपाध्याय, दीनदयाल: राष्ट्र जीवन की दिशा, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 1979।
4. शर्मा, महेश चन्द्र: दीनदयाल उपाध्याय, सम्पूर्ण वाड़ग्मय, खण्ड 6, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016।
5. प्रो. बाल: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अर्थ, राष्ट्र धर्म प्रकाशन, 1964।
6. पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन, एकात्म मानव दर्शन, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014।
7. उपाध्याय, दीनदयाल: दशम संस्करण, 'राष्ट्र जीवन की दिशा', लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर, लखनऊ, 2007।

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

8. उपाध्याय, दीनदयाल: द्वितीय संस्करण, "पाॅलिटिकल डायरी" सुरूचि प्रकाशन, झण्डेवालन, नई दिल्ली, 1991।
9. उपाध्याय दीनदयाल: भारतीय अर्थ नीति-विकास की एक दिशा, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ।
10. उपाध्याय दीनदयाल: "राष्ट्र जीवन की समस्यायें, राष्ट्रधर्म प्रकाशन, लखनऊ, 1960।
11. ठेंगड़ी, दत्तोपन्त: "एकात्म मानववद: एक अध्ययन" भारतीय संस्कृति पुनरूत्थान समिति, उ0प्र0, 1970।
12. देवधर, विश्वनाथ नारायण: "पण्डित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन" खण्ड-7 सुरूचि प्रकाशन, केशव कुंज, झण्डेवालान नई दिल्ली, 2014।
13. शरद, अनन्त कुलकर्णी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार-दर्शन, खण्ड-4, एकात्मा अर्थनीति।
14. दीनदयाल उपाध्याय: राष्ट्र चिन्तन।
15. अखण्ड भारत: साध्य और साधन, राष्ट्रधर्म पुस्तक प्रकाशन, लखनऊ।
16. पाठक, डाॅ0 विनोद चन्द्र: पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2009।
17. संखला मनोज:युगपुरूष पंडित दीनदयाल उपाध्याय, राज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2017।
18. सिंह, डा. अमरजीत: मैं दीनदयाल उपाध्याय बोल रहा हूँ-पंडित दीनदयाल उपाध्याय, 2018।
19. भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा: राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि0, 1958।
20. मिश्र, अनिल दत्त, पद्म सिंह, जय गुप्ता,: दीनदयाल उपाध्याय एक अध्ययन, कांसेप्ट पब्लिशिंग कं0प्रा0लि0, नई दिल्ली।
21. पाण्डेय, डाॅ0 दिग्विजय नाथ (संपादक): पंडित दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन के विविध आयाम, स्वर्णाजलि पब्लिकेशन प्रा0लि0, गाजियाबाद, उ0प्र0।

***

The Asian Thinker